'दिनकर जयन्ती' पर महामहिम
राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक– 23.09.2016, समय–11:00 बजे पूर्वाह्न)

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी के जयंती–समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित बिहार राज्य के शहरी विकास मंत्री श्री महेश्वर हजारी जी, राज्यसभा सांसद और पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ॰ सी॰पी॰ ठाकुर जी, लोकसभा सांसद डॉ॰ भोला प्रसाद सिंह जी, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर के कुलपति प्रो॰ आर॰एस॰ दूबे जी, बेगूसराय नगर के मेयर श्री उपेन्द्र सिंह जी, प्रो॰ चन्द्रभूषण प्रसाद सिंह जी, बुद्धिजीवीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

राष्ट्रकवि दिनकर जी की जयंती के सुअवसर पर आयोजित समारोह में उपस्थित होकर मैं अपने को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूँ। दिनकर जी केवल बिहार के ही सपूत नहीं थे और न केवल हिन्दी भाषा के एक श्रेष्ठ कवि थे– अपितु, वे सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति की महिमा का बखान करनेवाले एक ऐसे साहित्यकार थे, जिनकी वाणी का प्रभाव और उनकी लोकप्रियता राष्ट्रव्यापी थी। पूरे भारत की साहित्यकार–बिरादरी ही नहीं– भारत के हर प्रान्त के हर क्षेत्र के लोग दिनकर जी से परिचित व प्रभावित थे।

दिनकर जी के जीवन के बारे में अध्ययन के क्रम में मेरी जानकारी में आया कि बिहार के दो विश्वविद्यालयों से उनके निकट के संबंध रहे। तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर और भागलपुर विश्वविद्यालय– दोनों जगह आदरणीय दिनकर जी ने अपनी सेवाएँ दी। आप सभी अवगत हैं कि बिहार के राज्यपाल के अतिरिक्त मुझे बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति के रूप में भी सेवा करने का सुअवसर

मिला है। दिनकर जी एक शिक्षक के रूप में एवं बाद में कुलपति के रूप में बिहार के विश्वविद्यालयों में कार्यरत रहे– यह मेरे लिए भी अत्यंत गौरव और सम्मान का विषय है।

दिनकर जी ने 15 अगस्त, 1947 को एक कविता लिखी थी, जो 'स्वतंत्रता–दिवस' को समर्पित थी। उसमें उन्होंने आजादी मिलने की खुशी से ज्यादा, सामने आ पड़ी जिम्मेवारियों का उल्लेख किया था। दिनकर जी की वह कविता 'अरूणोदय' शीर्षक से छपी थी। उसकी दो सामयिक पंक्तियाँ मैं आप सबके बीच में साझा करना चाहता हूँ–

''आजादी नहीं चुनौती है,

यह बीड़ा कौन उठाएगा?

खुल गया द्वार, पर कौन,

देश को मंदिर तक पहुँचाएगा?''

–मित्रों, ये पंक्तियाँ तब दिनकर जी के मन की आशंकाओं को ही नहीं व्यक्त कर रही थीं, बल्कि हमें उस समय सावधान और सचेत भी कर रहीं थीं। किसी भी युगद्रष्टा साहित्यकार से अपेक्षा सिर्फ यही नहीं होती है कि वह युगीन ज्वलंत समस्याओं की ओर महज हमारा ध्यान आकृष्ट करेगा। वस्तुतः समस्याओं के फलाफल से अवगत कराते हुए भविष्य के लिए जो रचनाकार रास्ता बताते हैं, समाधान सुझाते हैं, वही कालजयी कविता या साहित्य–सृजन कर पाते हैं। दिनकर जी ने समस्याओं को तो रखा ही, परन्तु भविष्य के निर्माण की राह क्या हो, समाधान और सृजन का पथ क्या हो– उन्होंने इस ओर भी स्पष्ट दिशा–निर्देश प्रदान किया।

दिनकर जी 'राष्ट्रकवि' के रूप में हिन्दी साहित्य में विख्यात हुए। आप सब जानते हैं, 'राष्ट्रकवि' का दर्जा कोई सरकार नहीं देती। आदरणीय मैथिलीशरण गुप्त जी को महात्मा गाँधी जी ने 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा से विभूषित किया था, पर दिनकर जी को यह सम्मान भारतीय जनता द्वारा सीधे तौर पर प्राप्त हुआ। वस्तुतः जन–वाणी ने 'राष्ट्रकवि' के रूप में दिनकर को गौरवान्वित किया था।

मित्रों, मैं अकादमिक जीवन में कानून और वाणिज्य की किताबों से जुड़ा रहा हूँ, लेकिन साहित्य और साहित्यकारों के प्रति अनुराग और सम्मान का भाव मुझमें शुरू से रहा है। इसीलिए, हमारे मित्र और राज्यसभा सांसद डॉ॰ सी॰ पी॰ ठाकुर जी ने जब दिनकर जी की जयन्ती में शामिल होने के लिए मुझे आमंत्रित किया, तो मैं तुरंत तैयार हो गया।

देवियों एवं सज्जनों, कविता को मूलतः भावना–प्रधान साहित्यक विधा माना जाता है। यही कारण है कि कवियों को कल्पना–जीवी बताते हुए, प्रायः 'जहाँ न जाये रवि, वहाँ जाये कवि' की कहावत सुनायी जाती है। किन्तु, मुझे लगता है कि कविता सिर्फ कल्पना और भावना तक ही सीमित विधा नहीं है। इसमें गंभीर और व्यापक विचार भी रखे जा सकते हैं। दिनकर जी के काव्य की यह विशेषता है कि यहाँ भावना और विचार–दोनों का सुन्दर समन्वय है। दिनकर जी के काव्य में विचार–तत्व की प्रधानता देखकर कुछ लोग उन्हें 'विचारों का कवि' भी कहते हैं। परंतु मुझे लगता है, दिनकर जी के विचार भी कविता की रस–माधुरी में ऐसे पगे हुए हैं कि उनसे असहमति की कोई स्थिति ही नहीं बन पाती।

दिनकर जी का अधिकांश साहित्य–सृजन वीर भाव से ओत–प्रोत है, लेकिन वे केवल क्रांति की ही बातें नहीं करते, वे

विश्वशांति के भी परम उपासक हैं। 'कुरूक्षेत्र' नामक अपने काव्य–ग्रंथ में वे युद्ध और शांति की समस्या पर अपने विचार बहुत संतुलित रूप से रखते हैं। वे कहते हैं–

''श्रेय होगा सुष्ठु विकसित मनुज का वह काल

जब नहीं होगी धरा, नर के रूधिर से लाल।''

–दिनकर जी सुख–शांति के लिए समाज में समानता को अपरिहार्य मानते हैं। लिखते हैं–

''शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख–भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो नहीं किसी को कम हो''।।

–हमारे संविधान के प्रमुख रचनाकार डॉ॰ अम्बेदकर जी ने भी इसी सामाजिक समता और आर्थिक समानता को भारत के विकास का मूल मंत्र माना है।

अपनी एक प्रमुख कृति 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र को जिस रूप में दिनकर जी ने महिमा–मंडित किया है, वह वैचाारिक रूप से उनकी प्रगतिशीलता और अभिवंचित वर्ग के प्रति उनकी न्यायपरक सहृदय दृष्टि का ही परिचायक है। दिनकर जी ने 'रश्मिरथी' में स्पष्ट रूप से लिखा है–

''ऊँच नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,

दया–धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।''

आजादी मिलने के बाद भी दिनकर जी के स्वर कभी मद्धिम नहीं पड़े। 'भारतीय गणतंत्र' की स्थापना हो जाने के बाद उल्लसित होकर उन्होंने लिखा–

''सदियों की ठंडी–बुझी राख सुगबुगा उठी,

मिट्टी सोने का ताज पहन इठलाती है।

दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।।''

–दिनकर का यह ओज और तेज ही उनके काव्य की मूल पहचान है। यह बिहार का सौभाग्य है कि दिनकर बेगूसराय में जन्मे और बिहार के सपूत कहलाए। परंतु ऐसे सपूत पूरी वसुधा के श्रृंगार होते हैं। पूरी दुनिया के सरताज होते हैं। यही कारण है कि दिनकर जी की कविता कालजयी कविता है, जो पूरे विश्व–साहित्य में अनूठी पहचान रखती है। दिनकर की कविताओं के अनुवाद कई भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी, स्पेनिस, रसियन आदि विदेशी भाषाओं में भी हुए हैं।

मैं आज ऐसे महामानव दिनकर जी की जयन्ती के अवसर पर अपनी ओर से और समस्त बिहारवासियों की ओर से उन्हें अपने श्रद्धा–सुमन निवेदित करता हूँ। वे सचमुच 'युगधर्म के हुंकार' थे, और थे– अपने समय ही नहीं, हर युग, हर काल में प्रकाश–पुंज बने रहनेवाले अक्षय–अमिट दिनकर! उन्हें बारम्बार प्रणाम! आप सबको भी बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।